पाठ – तीन बुद्धिमान

शब्दार्थ -

1. संचित – जोड़ना / एकत्र करना
2. पैनी दृष्टि – गहरी समझ रखने वाली नज़र
3. चरवाहा – पशु चराने वाला व्यक्ति
4. पैरों में छाले पड़ना – ज़्यादा चलने के कारण पैरों में घाव हो जाना
5. पग – कदम
6. मझला – बीच का
7. शंका – संदेह / शक |
8. स्वामी – मालिक
9. भटक जाना – खो जाना
10. रेवड़ – पशुओं का झुंड
11. साहस – हिम्मत
12. चूकने नहीं देना – बचने ने देना
13. परिवेश – आस-पास की जगह या वातावरण
14. पैनी – तीखी
15. फुसफुसाना – धीरे-धीरे बोलना
16. पेटी – छोटा संदूक या बक्सा
17. ढंग – तरीका
18. आश्चर्यचकित – हैरान
19. आवभगत – सेवा-सत्कार करना
20. चिह्न – निशान
21. असाधारण – खास / असामान्य
22. तीक्ष्ण – तीव्र / तेज़
23. कोष – खज़ाना

पाठ से

मेरी समझ से

(क) लोककथा के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

प्रश्न 1.

लोककथा में पिता ने अपने बेटों से 'धन संचय करने' को कहा। उनकी इस बात का क्या अर्थ हो सकता है?

- खेती-बारी करना और धन इकट्ठा करना
- पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि का विकास करना
- ऊँट का व्यापार करना

egyanarchive

- गाँव छोड़कर किसी नगर में जाकर बसना

उत्तर:

• पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि का विकास करना (★)

प्रश्न 2. तीनों भाइयों ने अपने ज्ञान और बुद्धि का उपयोग करके ऊँट के बारे में बहुत कुछ बता दिया। इससे क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

- बुद्धि का प्रयोग करके ऊँट के बारे में सब-कुछ बताया जा सकता है।
- समस्या को सुलझाने के लिए ध्यान से निरीक्षण करना महत्वपूर्ण है।
- किसी व्यक्ति का ज्ञान, बुद्धि और धन ही सबसे बड़ी ताकत है।
- ऊँट के बारे में जानने के लिए दूसरों पर भरोसा करना चाहिए।

उत्तर:

• समस्या को सुलझाने के लिए ध्यान से निरीक्षण करना महत्वपूर्ण है। (★)

प्रश्न 3. राजा ने भाइयों की बुद्धिमता पर विश्वास क्यों किया?

- भाइयों ने अपनी बात को तर्क के साथ समझाया।
- राजा को ऊँट के स्वामी की बातों पर संदेह था।
- राजा ने स्वयं ऊँट और पेटी की जाँच कर ली थी।
- भाइयों ने राजा को अपनी बात में उलझा लिया था।

उत्तर:

• भाइयों ने अपनी बात को तर्क के साथ समझाया। (★)

प्रश्न 4. लोककथा के पात्रों और घटनाओं के आधार पर, राजा के निर्णय के पीछे कौन-सा मूल्य छिपा है ?

- दोषी को कड़ा से कड़ा दंड देना हर समस्या का सबसे बड़ा समाधान है।
- अच्छी तरह जाँच किए बिना किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहिए।
- राजा की प्रत्येक बात और निर्णय को सदा सही माना जाना चाहिए।
- ऊँट की चोरी के निर्णय के लिए सेवक की बुद्धि का उपयोग करना चाहिए।

उत्तर:

• अच्छी तरह जाँच किए बिना किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहिए।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने भिन्न-भिन्न उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

उत्तर:

1. पिता की बात का मतलब यह है कि हमें अपनी सोच को तेज़ और समझ को गहरी बनानी चाहिए, ताकि हम जीवन में आने वाली हर कठिनाई का सामना कर सकें।

egyanarchive

2. तीनों भाइयों ने ऊँट को देखे बिना ही अपनी समझ और बुद्धि से उसके बारे में सही-सही बताया। इससे हमें यह सीख मिलती है कि अगर हम ध्यान से चीज़ों को देखें और सोचें, तो किसी भी समस्या को हल कर सकते हैं।
3. मेरे अनुसार, राजा ने तीनों भाइयों की बुद्धिमानी पर इसलिए भरोसा किया क्योंकि उन्होंने अपने विचार अच्छे तर्कों के साथ समझाए थे। जब कोई बात तर्क के साथ कही जाती है, तभी लोग उस पर विश्वास करते हैं।
4. मेरे अनुसार, राजा के फैसले से यह सीखने को मिलता है कि बिना जाँच किए किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहिए। अगर जल्दबाजी में फैसला लिया जाए, तो किसी निर्दोष को सज़ा मिल सकती है। इसलिए सही जाँच के बाद ही फैसला लेना चाहिए, जिससे राजा और जनता – दोनों का भला हो।

(विद्यार्थी अपने मित्रों के साथ चर्चा करके बताएँगे कि उनके द्वारा विकल्प चुनने के क्या कारण हैं।)

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए-

(क) "रुपये-पैसे के स्थान पर तुम्हारे पास पैनी दृष्टि होगी और सोने-चाँदी के स्थान पर तीव्र बुद्धि होगी। ऐसा धन संचित कर लेने पर तुम्हें कभी किसी प्रकार की कमी न रहेगी और तुम दूसरों की तुलना में उन्नीस नहीं रहोगे।"

उत्तर: तुम धन यानी रुपये-पैसे पर नहीं बल्कि बुद्धिमानी, समझदारी और सूझबूझ पर ध्यान दोगे। तुम्हारी दृष्टि पैसों की जगह उस समझ पर होगी, जो किसी भी समस्या का हल खोज सकती है। फिर इससे बड़ी पूँजी क्या हो सकती है।

(ख) "हर वस्तु और स्थिति को पूर्णतः समझने और जानने का प्रयास करो। कुछ भी तुम्हारी दृष्टि से न बच पाए।"

उत्तर:

चाहे कोई वस्तु हो या परिस्थिति उसे पूरी तरह से जानने, समझने और महसूस करने की कोशिश करो। ऐसा दृष्टिकोण अपनाओ कि कोई भी बात हमारी नज़र से न छूटे।

(ग) "हमने अपने परिवेश को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के प्रयास में बहुत समय लगाया है।"

उत्तर:

हमने अपने परिवेश यानी आसपास के वातावरण और परिस्थितियों को गहराई से समझने की कोशिश की है। हर बात को बुद्धि का प्रयोग करके निष्कर्ष निकालने वाली यह प्रक्रिया बहुत समय लेने वाली होती है।

मिलकर करें मिलान

• इस लोककथा में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे स्तंभ- 1 में दिए गए हैं। उनके भाव या अर्थ से मिलते-जुलते वाक्य स्तंभ -2 में दिए गए हैं। स्तंभ- 1 के वाक्यों को स्तंभ -2 के उपयुक्त वाक्यों से सुमेलित कीजिए-

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. कुछ समय पश्चात् पिता चल बसे।	1. घोड़े पर सवार व्यक्ति ने तीनों भाइयों को अविश्वास से देखा।
2. हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे।	2. थोड़े समय के बाद पिता का देहांत हो गया।
3. घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शंका की दृष्टि से देखा।	3. लोग इतने अचंभित थे कि उनका आश्चर्य व्यक्त करना कठिन था।
4. बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम कुछ भी अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते।	4. बचपन से ही हमें आदत हो गई है कि हम हर छोटी-बड़ी वस्तु पर ध्यान अवश्य देते हैं।
5. लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना न था।	5. हम चाहे जहाँ भी हों, हमें खाने के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाएगा।

उत्तर:

1. – 2
2. – 5
3. – 1
4. – 4
5. – 3

सोच-विचार के लिए

लोककथा को एक बार फिर ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए-

(क) तीनों भाइयों ने बिना ऊँट को देखे उसके विषय में कैसे बता दिया था?

उत्तर:

तीनों भाइयों ने निम्नलिखित बिंदुओं का अवलोकन, अनुमान एवं विश्लेषण करके ऊँट के विषय में बताया-

- धूल पर ऊँट के पैरों के चिह्नों से।
- ऊँट एक आँख से नहीं देख पाता था क्योंकि उसने सड़क के केवल एक तरफ़ से ही घास चरी थी।
- बच्चे और महिला के पैरों के निशान से।

(ख) आपके अनुसार इस लोककथा में सबसे अधिक महत्व किस बात को दिया गया है- तार्किक सोच, अवलोकन या सत्यवादिता? लोककथा के आधार पर समझाइए।

उत्तर: इस कहानी से यह सीखने को मिलता है कि अगर हम ध्यान से देखें और समझदारी से सोचें, तो किसी भी बात का सही पता लगाया जा सकता है।

(विद्यार्थी उपर्युक्त उत्तर – संकेत के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर स्वयं दें।)

(ग) लोककथा में राजा ने पहले भाइयों पर संदेह किया लेकिन बाद में उन्हें निर्दोष माना। राजा की सोच क्यों बदल गई?

उत्तर:

इस लोककथा में राजा ने शुरू में तीनों भाइयों को चोर समझा और उन पर शक किया। लेकिन बाद में जब भाइयों ने शांत तरीके से अपनी बात समझाई और अपने अवलोकन और तर्क बताए, तो राजा की सोच बदल गई।

राजा उनकी बुद्धिमानी, समझदारी और ध्यान से देखने की आदत से बहुत प्रभावित हुआ। उसे यह समझ में आ गया कि ये लोग चोर नहीं हैं, बल्कि सच्चाई को समझने वाले और समझदार लोग हैं।

(घ) ऊँट के स्वामी ने भाइयों पर तुरंत संदेह क्यों किया? आपके विचार से उसे क्या करना चाहिए था जिससे उसे अपना ऊँट मिल जाता ?

उत्तर: (विद्यार्थी इस संदर्भ में अपने विचार स्वयं लिखें।)

ऊँट के स्वामी ने भाइयों पर तुरंत संदेह किया क्योंकि वे तीनों भाई बिना देखे ऊँट के बारे में बहुत सारी सटीक बातें बता रहे थे। जब व्यक्ति अपना कुछ खो देता है तो वह घबराहट में पूरी बात जाने बिना जल्दी ही किसी पर भी संदेह कर लेता है। यही ऊँट के स्वामी ने भी किया।

हमारे विचार से उसे सीधे आरोप लगाने के बजाय शांत होकर भाइयों से पूछताछ करनी चाहिए थी कि तुम ये सब कैसे जानते हो, क्या तुमने ऊँट को देखा, क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो? अगर वह धैर्य और विश्वास के साथ बात करता, तो शायद वे भाई उसकी तुरंत मदद करते और उसका ऊँट जल्दी मिल जाता।

(ङ) पिता ने बेटों को "दूसरे प्रकार का धन" संचित करने की सलाह क्यों दी? इससे पिता के बारे में क्या-क्या पता चलता है?

उत्तर: (विद्यार्थी इस संदर्भ में अपने विचार स्वयं लिखें।)

पिता ने अपने बेटों से कहा कि वे 'दूसरे प्रकार का धन' यानी समझदारी, बुद्धि, सही सोच और काम की जानकारी जमा करें। क्योंकि असली धन यही होता है – जो हर मुश्किल में काम आता है।

पिता चाहते थे कि उनके बेटे ऐसे गुण सीखें जिससे वे जीवन की किसी भी परेशानी का सामना कर सकें। इससे पता चलता है कि पिता बहुत समझदार और आगे की सोच रखने वाले थे। उनका मकसद यह था कि बेटे सोच-समझकर सही फ़ैसले लेना और समस्याओं को हल करना सीखें।

(च) राजा ने भाइयों की परीक्षा लेने के लिए पेटी का उपयोग किया। इस परीक्षा से राजा के व्यक्तित्व और निर्णय शैली के बारे में क्या-क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

उत्तर: राजा ने जो परीक्षा ली, उससे यह पता चलता है कि वह न्याय करने वाला, शांत और समझदार था। उसने बिना पूरी बात जाने भाइयों को सज़ा नहीं दी। जब उस पर आरोप लगाया गया, तो उसने खुद सोच-समझकर सच्चाई जानने का फैसला किया।

राजा यह देखना चाहता था कि तीनों भाई सच बोल रहे हैं या नहीं और क्या वे वाकई बुद्धिमान हैं। इससे पता चलता है कि राजा बहुत ही व्यावहारिक सोच वाला था।

(छ) आप इस लोककथा के भाइयों की किस विशेषता को अपनाना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर: हम इस लोककथा के भाइयों की तरह ध्यान से देखने (सूक्ष्म अवलोकन) और समझदारी से सोचने (तार्किक सोच) की आदत अपनाना चाहेंगे। ध्यान से देखने से हमें यह समझ में आता है कि बड़ी बातें अक्सर छोटी-छोटी बातों में छिपी होती हैं — बस हमें ध्यान देने की ज़रूरत होती है। तार्किक सोच हमें यह सिखाती है कि किसी भी बात पर भावनाओं में बहने के बजाय सोच-समझकर फ़ैसला लेना चाहिए। यह आदतें हमें हर तरह की समस्या को हल करने में मदद करती हैं।

(विद्यार्थी अपनी समझ के आधार पर अन्य उत्तर भी लिख सकते हैं।)

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए-

(क) यदि राजा ने बिना जाँच के भाइयों को दोषी ठहरा दिया होता तो इस लोककथा का क्या परिणाम होता?

उत्तर:

यदि राजा ने बिना जाँच के भाइयों को दोषी ठहरा दिया होता तो इस लोककथा का परिणाम न्यायहीन और नकारात्मक होता।

1. इससे उन तीनों निर्दोष भाइयों को सज़ा मिल जाती और यह अन्याय होता।
2. भाइयों की बुद्धिमानी की कदर नहीं होती और उनकी योग्यता दब जाती।
3. राजा की छवि कमजोर हो जाती और उसकी न्यायप्रियता पर सवाल उठते।
4. कहानी की सीख बदल जाती और यह कहानी यह नहीं सिखा पाती कि बुद्धिमता और सच्चाई की जीत होती है।
5. सच बोलने वालों को सज़ा मिलती जो कि नकारात्मक संदेश होता।

(विद्यार्थी अपने अनुमान और कल्पना के आधार पर कुछ अन्य परिणामों की चर्चा कर सकते हैं।)

(ख) यदि भाइयों ने अनार के बारे में सही अनुमान न लगाया होता तो लोककथा का अंत किस प्रकार होता? अपने विचार व्यक्त करें।

उत्तर:

यदि भाइयों ने अनार के बारे में सही अनुमान न लगाया होता तो लोककथा का अंत निम्न प्रकार का होता –

1. भाइयों की बुद्धिमता पर संदेह होता।
2. राजा उन्हें दोषी ठहरा सकता था।
3. उन्हें कड़ी सजा मिल सकती थी।

(विद्यार्थी अनुमान के आधार पर अपने अन्य विचार भी व्यक्त सकते है।)

(ग) लोककथा में यदि तीनों भाई ऊँट को खोजने जाते तो उन्हें कौन-कौन सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता था?

उत्तर:

अगर तीनों भाई खुद ऊँट को खोजने जाते, तो उन्हें कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता, जैसे:

1. **रास्ते की कठिनाई** – रेत पर ऊँट के पैरों के निशान जल्दी मिट सकते थे। ऐसे में ऊँट के पीछे-पीछे चलना बहुत मुश्किल होता।
2. **रास्ता भटकने का डर** – ऊँट किसी भी दिशा में चला गया होगा। अगर भाई उसे ढूँढ़ने निकलते, तो वे भी गलत दिशा में जाकर रास्ता भटक सकते थे।
3. **निशानों में भ्रम** – रास्ते में और भी ऊँट चले होंगे। ऐसे में यह पहचानना मुश्किल होता कि कौन-से निशान उसी खोए हुए ऊँट के हैं।

(घ) यदि राजा के स्थान पर आप होते तो भाइयों की परीक्षा लेने के लिए किस प्रकार के सवाल या गतिविधियाँ करते? अपनी कल्पना साझा करें।

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं को राजा के स्थान पर रखकर भाइयों की परीक्षा लेने के लिए सवाल या गतिविधियों को तैयार करेंगे।

शब्द से जुड़े शब्द

• नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'बुद्धि' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए-

उत्तर:

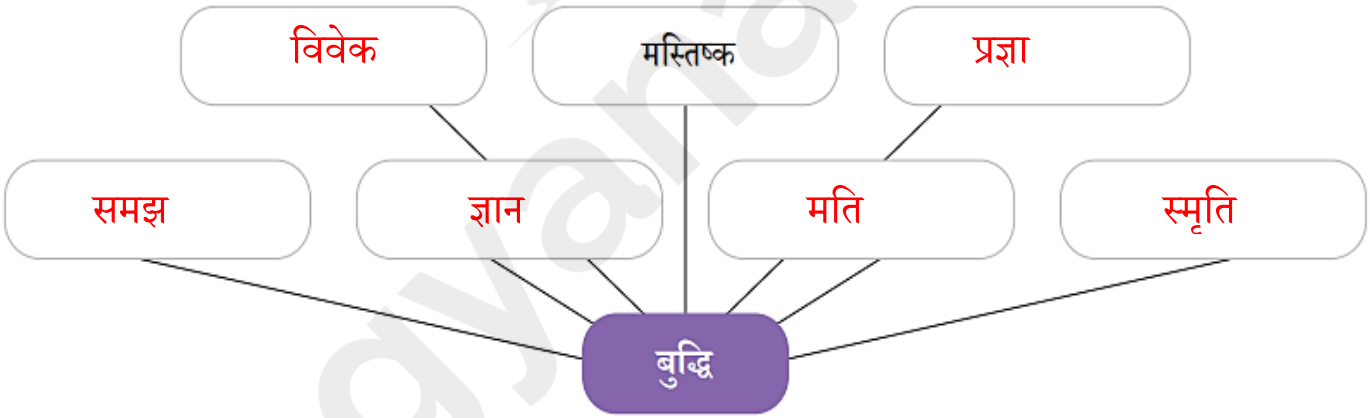

(विद्यार्थी समूह में चर्चा कर अन्य शब्द भी लिख सकते हैं।)

लोककथा को सुनाना

उत्तर:

- विद्यार्थी पृष्ठ संख्या 24 पर दिए गए सुझावों को पढ़कर लोककथा को आकर्षक ढंग से सुना सकते हैं।

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होने वाले शब्दों के ऐसे रूपों को कारक या परसर्ग कहते हैं। कारक शब्दों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

(विद्यार्थी पाठ्य पुस्तक की पृष्ठ संख्या – 24-25 को ध्यान से पढ़कर कारक के विषय में समझें।)

ने, को, पर, से, के द्वारा, का, में, के लिए, की, के, हे, हो, अरे

नीचे दिए गए वाक्यों में कारक लिखकर इन्हें पूरा कीजिए-

उत्तर:

1. "हमने तो तुम्हारे ऊँट **को** देखा तक नहीं", भाइयों **ने** परेशान होते हुए कहा।
2. "मैं अपने रेवड़ों **को** पहाड़ों **पर** लिये जा रहा था, उसने कहा, और मेरी पत्नी मेरे छोटे-से बेटे **के** साथ एक बड़े-से ऊँट **पर** मेरे पीछे-पीछे आ रही थी।"
3. राजा **ने** उसी समय अपने मंत्री **को** बुलाया और उसके कान **में** कुछ फुसफुसाया।
4. यह सुनकर राजा **ने** पेटी **को** पास लाने **का** आदेश दिया। सेवकों **ने** तुरंत आदेश पूरा किया। राजा **ने** सेवकों **से** पेटी खोलने **को** कहा।

सूचनापत्र

• कल्पना कीजिए कि आप इस लोककथा के वह घुड़सवार हैं जिसका ऊँट खो गया है। आप अपने ऊँट को खोजने के लिए एक सूचना कागज पर लिखकर पूरे शहर में जगह-जगह चिपकाना चाहते हैं। अपनी कल्पना और लोककथा में दी गई जानकारी के आधार पर एक सूचनापत्र लिखिए।

उत्तर:

सूचनापत्र

सूचना का विषय ऊँट खोने के संबंध में

दिनांक : ....

मैं एक व्यापारी हूँ। मेरा ऊँट रास्ते में कहीं खो गया है। मेरे ऊँट पर मेरी पत्नी और बेटा भी सवार थे इसलिए मेरे लिए वह बहुत मूल्यवान है। मेरे ऊँट की पहचान इस प्रकार है—

- वह एक आँख से अंधा है।
- ऊँट पर एक महिला और बच्चा सवार हैं। अगर किसी ने इस तरह के ऊँट को देखा है या इसके बारे में कोई जानकारी हो तो कृपया मुझे तुरंत संपर्क करें। सूचना देने वाले को उचित इनाम दिया जाएगा।

घुड़सवार

दरबारी चौक

पाठ से आगे

आपकी बात

प्रश्न 1. लोककथा में तीन भाइयों की पैनी दृष्टि की बात कही गई है। क्या आपने कभी अपनी पैनी दृष्टि का प्रयोग किसी समस्या को हल करने के लिए किया है? उस समस्या और आपके द्वारा दिए गए हल के विषय में लिखिए।

उत्तर:
हाँ, मैंने भी एक बार अपनी पैनी दृष्टि का प्रयोग एक समस्या को हल करने में किया है। एक बार हमारे विद्यालय में विज्ञान- प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। हमारी टीम ने एक सोलर पावर मॉडल बनाया था लेकिन समस्या तब हो गई जब अचानक सौर पैनल ने काम करना बंद कर दिया जबकि बाकी सब कुछ सही था। टीम के कुछ साथी सोच रहे थे कि शायद बैटरी खराब है।
कुछ ने कहा पूरा सिस्टम बदलना पड़ेगा। लेकिन मैंने शांत होकर उसके एक-एक हिस्से को ध्यान से देखा, मुख्य रूप से पैनल के तारों के जोड़। मुझे दिखाई दिया कि एक पतला तार पैनल से पूरी तरह से नहीं जुड़ा था। वह ढीला था मगर आँखों से साफ़ नज़र नहीं आ रहा था। मैंने उसे ठीक से जोड़ा और मॉडल तुरंत काम करने लगा। इस प्रकार, मैंने समस्या का समाधान पैनी दृष्टि से देखकर कर डाला।
(विद्यार्थी इसी तरह को कोई अपना अनुभव उत्तर के रूप में साझा कर सकते हैं।)

प्रश्न 2. लोककथा में बताया गया है कि भाइयों ने "बचपन से हर वस्तु पर ध्यान देने की आदत डाली।" यदि आपने ऐसा किया है तो आपको अपने जीवन में इसके क्या-क्या लाभ मिलते हैं?
उत्तर: (विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर उत्तर लिखें।)
लोककथा के तीनों भाइयों की तरह मैंने भी बचपन से ही यह कोशिश की है कि हर वस्तु घटना और व्यक्ति को ध्यान से देखूँ, समझूँ और महसूस करूँ। धीरे-धीरे यह मेरी आदत बन गई। इस आदत से मुझे जीवन में कई लाभ हुए हैं; जैसे-

- समस्याओं को जल्दी समझना।
- पढ़ाई में बेहतर समझ होना।
- दूसरों की भावना समझ पाना।
- गलतियों से जल्दी सीखना।

प्रश्न 3. लोककथा में भाइयों को यात्रा करते समय अनेक कठिनाइयाँ आईं, जैसे- भूख, थकान और पैरों में छाले। आप अपने दैनिक जीवन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करते हैं? लिखिए।
उत्तर: (विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर उत्तर लिखें।)
अपने दैनिक जीवन में हम निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करते हैं-

1. समय की कमी।
2. परीक्षा के समय तनाव होना।
3. आत्मसंयम की कमी।
4. कोई विषय या सवाल समझ में न आना।

प्रश्न 4. भाइयों ने बिना देखे कि ऊँट के बारे में सही-सही बातें बताईं। क्या आपको लगता है कि अनुभव और समझ से देखे बिना भी सही निर्णय लिया जा सकता है? क्या आपने भी कभी ऐसा किया है?
उत्तर: (विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर उत्तर लिखें।)
अनुभव और समझ से देखे बिना भी सही निर्णय लिया जा सकता है, अगर हमारे पास अनुभव, समझ और ध्यान से सोचने की क्षमता हो।

हाँ, हमने भी ऐसा किया है। एक बार हमारी कक्षा में एक सामूहिक परियोजना कार्य चल रहा था। हमारे समूह का एक सदस्य लगातार कार्य में सहयोग नहीं कर रहा था। कुछ विद्यार्थी उसे आलसी और कामज़ोर तक कहने लगे थे। लेकिन मैंने इस समस्या की जड़ तक जाने की सोची तथा उससे इस बारे में बात की। उससे मुझे ज्ञात हुआ कि उसकी माँ की तबीयत बहुत खराब है।
इस कारण वह दुखी था और उसका मन किसी काम में नहीं लग रहा था। मैंने उससे पूछे बिना कोई निर्णय नहीं लिया। उसके व्यवहार और संकेतों को देखकर अंदाजा लगाया और वह अनुमान सही निकला। अपने अनुभव, सूझ-बूझ और गहरी समझ से हम सच्चाई का अनुमान लगा सकते हैं।

प्रश्न 5. जब ऊँट के स्वामी ने भाइयों पर शंका की तो भाइयों ने बिना गुस्सा किए शांति से उत्तर दिया। क्या आपको लगता है कि कभी किसी को संदेह होने पर हमें भी शांत रहकर उत्तर देना चाहिए? क्या आपने कभी ऐसी स्थिति का सामना किया है? ऐसे में आपने क्या किया? – मुझे लगता है कि जब कोई हम पर संदेह करता है, तो हमें गुस्से या झगड़े से जवाब देने की बजाय शांत और समझदारी से उत्तर देना चाहिए। जब हम धैर्य से जवाब देते हैं तो सामने वाला खुद भी सोचने पर मजबूर होता है तथा हमें समझता है।
उत्तर: (विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर उत्तर लिखें।)
मैंने भी ऐसी स्थिति का सामना किया है। एक बार विद्यालय में मेरी कॉपी किसी और की कॉपी से मिलती-जुलती पाई गई। कुछ लोगों को लगा कि मैंने नकल की है जबकि मैंने खुद मेहनत से लिखा था। शुरू में मुझे बहुत गुस्सा आया और बुरा भी लगा।
लेकिन मैंने खुद को शांत किया और अध्यापक से शांति से कहा कि आप चाहें तो मेरे पिछले नोट्स देख लें या मुझसे कोई भी सवाल पूछ लीजिए, मैं प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दे सकता हूँ। उन्होंने मुझसे सवाल पूछे तो उन्हें समझ आ गया कि मैंने नकल नहीं की। बाद में उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हारा शांत रहना ही सबसे बड़ा प्रमाण था कि तुम सच बोल रहे थे।

प्रश्न 6. राजा ने भाइयों की बुद्धिमानी देखकर बहुत आश्चर्य व्यक्त किया। क्या आपको कभी किसी की सोच, समझ या किसी विशेष कौशल को देखकर आश्चर्य हुआ है? क्या आपने कभी किसी से कुछ ऐसा सीखा है जो आपके लिए बिलकुल नया और चौंकाने वाला हो ?
उत्तर: (विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर उत्तर लिखें।)

प्रश्न 7. लोककथा में पिता ने अपने बेटों को यह सलाह दी कि वे समझ और ज्ञान जमा करें। क्या आपको कभी किसी बड़े व्यक्ति से ऐसी कोई सलाह मिली है जो आपके जीवन में उपयोगी रही हो? क्या आप भी अपने अनुभव से किसी को ऐसी सलाह देंगे?
उत्तर: (विद्यार्थी अपने अनुभव साझा करें।)
हाँ, मुझे भी एक बार अपने दादा जी से ऐसी सलाह मिली थी जो आज भी मेरे जीवन में बहुत उपयोगी साबित हो रही है। एक बार मैंने भाषण – प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। मैं बार-बार अपना भाषण याद कर रहा था किंतु उसे हर बार भूले जा रहा था।

मैं इतना निराश हो गया कि मैंने हार मान ली कि मैं भाषण नहीं दे पाऊँगा। तब मेरे दादा जी ने मुझे हार न मानने की सलाह देते हुए समझाया कि तुम अपनी पूरी कोशिश करो और चीज़ों को समझकर याद करो। हर कोशिश एक अनुभव है और अनुभव ही असली ज्ञान है। उनकी इस बात ने मुझे झकझोर दिया। उस दिन के बाद से, जब भी मैं किसी मुश्किल में होता हूँ तो खुद से यही सवाल पूछता हूँ कि क्या मैंने पूरी कोशिश की।
हाँ, मैं भी अपने अनुभव से अपने छोटे भाई को ऐसी सलाह देना चाहूँगा ताकि वह भी कठिन परिस्थिति का सामना कर सके।

प्रश्न 8. भाइयों में अपने ऊपर लगे आरोपों के होते हुए भी सदा सच्चाई का साथ दिया। क्या आपको लगता है कि सदा सच बोलना महत्वपूर्ण है, भले ही स्थिति कठिन क्यों न हो? क्या आपको किसी समय ऐसा लगा है कि आपकी सच्चाई ने आपको समस्याओं से बाहर निकाला हो ?

उत्तर: (विद्यार्थी अपने अनुभव साझा करें।)

हाँ, मुझे पूरी तरह से लगता है कि सच बोलना हमेशा सबसे महत्वपूर्ण होता है। चाहे हालात कितने भी कठिन क्यों न हो। सच कभी-कभी तुरंत राहत नहीं देता लेकिन वह हमें दीर्घकालीन सम्मान और भरोसा ज़रूर दिलाता है।

आज की पहेली

प्रश्न 1. कौन है यह प्राणी?

1. इसकी लंबी पूँछ होती है जो पेड़ों की शाखाओं के चारों ओर लिपटी रहती है।
2. इसका मुख्य आहार कीट और छोटे जीव होते हैं जिन्हें यह चुपके से पकड़ता है।
3. यह प्राणी अपने परिवेश में घुल-मिल जाता है और अपनी रंगत को बदल सकता है।
4. इसके पास तेज आँखें होती हैं जो चारों दिशाओं में देख सकती हैं।

उत्तर:

गिरगिट

प्रश्न 2. एक मेज पर चार रंगीन डिब्बे बराबर-बराबर रखे हैं- लाल, हरा, नीला और पीला। बताइए पीले डिब्बे के बराबर में कौन-सा डिब्बा है? यदि –

1. लाल डिब्बा नीले डिब्बे के पास है।
2. हरा डिब्बा पीले डिब्बे के पास नहीं है।
3. पीला डिब्बा लाल डिब्बे के पास नहीं है।
4. हरा डिब्बा लाल डिब्बे के पास है।

उत्तर:

नीला

खोजबीन के लिए

नीचे दिए गए लिंक का प्रयोग करके आप बहुत-सी अन्य लोककथाएँ देख-सुन सकते हैं—

- **सुनो लोककथा**
  https://www.youtube.com/watch?v=JEti31XNpmA

- **दुनिया की**
  https://www.youtube.com/watch?v=PehlQ71udFg

- **भूल चूक लेनी देनी**
  https://www.youtube.com/watch?v=GjYW-CZIDEA

egyanarchive